एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पौधों के लिए जैविक खाद के प्रकार और उनके उपयोग

(*विक्रम सिंह)
सहायक प्रोफ़ेसर, कृषि विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा
*संवादी लेखक का ईमेल पता: sainivikkyy@gmail.com

पशुओं के गोबर और सब्जियों, फसलों आदि के अवशेषों का उपयोग करके बनाई जाने वाली खाद को जैविक खाद कहा जाता है। पौधों में इस ऑर्गेनिक मैन्योर का इस्तेमाल करने से पौधों को जरूरी पोषक तत्व मिलते हैं, मिट्टी में फायदेमंद जीवाणुओं) की संख्या बढ़ती है और मिट्टी भुरभुरी बनती है। खाद के फायदे और उपयोग तो आजकल सभी लोग जानते हैं, लेकिन कई लोग यह नहीं जानते कि घर पर लगे पौधों के लिए जैविक खाद कितने प्रकार की होती है? इसी सवाल का जबाव देने के लिए आज के इस लेख में हम आपको जैविक खाद के प्रकार के बारे में पूरी जानकारी देने जा रहे हैं।

जैविक खाद के प्रकार

ऑर्गेनिक या जैविक खाद प्रमुख रूप से निम्न प्रकार की होती है

1. फार्म यार्ड खाद
2. कम्पोस्ट खाद
3. वर्मीकम्पोस्ट खाद
4. चिकन खाद
5. भेड़ या बकरी की खाद
6. घोड़े की खाद

1. **फार्म यार्ड खाद:** जैविक खाद के प्रकार की लिस्ट में फार्म यार्ड खाद का नाम सबसे ऊपर आता है। खेत या डेयरी पर गाय, भैंस के गोबर को किसी गड्ढे में इकठ्ठा करके सड़ने दिया जाता है। जिस जगह पर पशु बांधे जाते हैं, वहां पर पड़े पशुओं के गोबर, मल-मूत्र, चार) आदि को खाद के ढेर में डाला जाता है और उसके ऊपर समय-समय पर पानी का छिड़काव किया जाता है। 4 से 5 महीने के भीतर गोबर अच्छी तरह से सड़ जाता है और फार्म यार्ड खाद तैयार हो जाती है, जो कि बहुत उपजाऊ होती है। इस फार्म यार्ड या गोबर की खाद में 0.5-1.5% नाइट्रोजन, 0.4- 0.8% फास्फोरस, 0.5-1.9% पोटेशियम और बाकि अन्य सूक्ष्म पोषक तत्व पाए जाते हैं। लगभग सभी सब्जी, फल, फूल, हर्ब के पौधों में फार्मयार्ड खाद का उपयोग किया जा सकता है। इसे पौधे लगाने से पहले मिट्टी में मिलाते हैं या पहले से लगे पौधे की मिट्टी में मिला देते हैं।

2. **कम्पोस्ट खाद:** घर के कूड़े-कचरे, सब्जियों व फलों के छिलके, पौधों की पत्तियां इत्यादि चीजों के सड़ने से बनी कम्पोस्ट खाद भी एक प्रकार की जैविक खाद है। एक बर्तन में जैविक कचरे को इकठ्ठा करके किसी छायादार जगह पर रख दिया जाता है। इसके बाद हर 2-4 दिनों में कचरे के ढेर को उलट-पुलट किया जाता है और पानी का छिड़काव किया जाता है। इससे 2-3 महीने में खाद तैयार हो जाती है, जिसे कम्पोस्ट खाद कहते हैं। कम्पोस्ट खाद में NPK की प्रचुर मात्रा पाई जाती है। इसे भी गोबर खाद की तरह ही उपयोग किया जाता है।

3. **वर्मीकम्पोस्ट खाद:** इस खाद को बनाने के लिए केंचुए का इस्तेमाल किया जाता है। मिट्टी, गोबर, जैविक कचरे जैसे पत्तियां, सब्जियों के छिलके आदि के मिश्रण को एक बर्तन में भरकर उसमें केंचुओं को छोड़ दिया जाता है। केंचुए 2 महीने में ही जैविक सामग्री को खाकर जो मल त्यागते हैं, वही वर्मीकम्पोस्ट खाद होती है। इस खाद में सबसे ज्यादा पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसमें नाइट्रोजन, पोटेशियम, फास्फोरस, कैल्शियम, ह्यूमस और मैग्नीशियम जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसे भी मिट्टी तैयार करते समय और पहले से लगे पौधे की मिट्टी में गुड़ाई करके मिलाया जाता है।

4. **चिकन खाद:** मुर्गी या चिकन खाद भी जैविक खाद का एक प्रकार है। इसमें नाइट्रोजन और फास्फोरस अधिक मात्रा में पाई जाती है। इस खाद में 1.7% नाइट्रोजन, 2.4% फास्फोरस, और 1.7% पोटेशियम पाया जाता है। इस खाद को मुर्गीपालन करने वाली जगह पर बनाया जाता है। मुर्गियों के मल-मूत्र, पंख, चारा, पुआल, पौधों के पत्ते, घास की कतरन आदि सामग्रियों को अपघटित कराकर इस चिकन खाद को तैयार किया जाता है। इसे पौधों की मिट्टी की गुड़ाई करके मिला दिया जाता है, जिससे पौधे तेजी से ग्रोथ करने लगते हैं।

5. **भेड़ और बकरियों के गोबर की खाद:**
यह खाद भेड़ और बकरी पालने वाली जगह पर तैयार की जाती है। इन पशुओं का अपशिष्ट सड़ने के बाद खाद का काम करता है। इस खाद में 1.5% नाइट्रोजन, 1% फास्फोरस और 1.8% पोटेशियम पाया जाता है। इस खाद को आप ऑनलाइन भी खरीद सकते हैं और अपने सब्जी, हर्ब, फल और फूलों के पौधों में उपयोग कर सकते हैं।

6. **घोड़े के गोबर की खाद:** हॉर्स मैन्योर यानि घोड़े के गोबर की खाद पोषक तत्वों का एक अच्छा स्रोत है, जिसके इस्तेमाल से घर पर लगे पौधों की ग्रोथ अच्छी होती है। हॉर्स मैन्योर में गाय के गोबर की तुलना में अधिक नाइट्रोजन और पोषक तत्व होते हैं। इसमें 1.5% नाइट्रोजन, 1% फास्फोरस और 1.5% पोटेशियम पाया जाता है। मक्का, आलू, लहसुन और लेटस, लॉन जैसे नाइट्रोजन की जरूरत वाले पौधों में घोड़े के गोबर की खाद दी जानी चाहिए, जबकि फूलों और फलों वाले पौधों में इस खाद को डालने से बचना चाहिए।